# हिन्दी महिला नाटकारों के नाटकों में मानवाधिकार

[1]डॉ. अनीश के एन

सारांश

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । अत: समाज से लेन देन जरूरी है। समाज से लेन देन के सन्दर्भ में समाजिक नियमों की भूमिका महत्वपूर्ण है ।समाज में स्त्री और पुरुष दोनों के लिए स्थान है । लेकिन पुरुष वर्चस्ववादी समाज में स्त्री मात्र उपभोग की सामग्री है। भारतीय चिंतन और भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान माननीय था । सिर्फ भारत ही एकमात्र राष्ट्र है जो संपूर्ण ब्रह्माण्ड को पराशक्ति माँ की माया मानता है । इतना महान स्थान नारी को भारतीय संस्कृति में था । युगों के परिवर्तन के मुताबिक उसकी मान्यता गिरने लगी । लेकिन नवजागरण की वजह से आज़ादोत्तर भारतीय समाज में कई प्रकार के परिवर्तन विद्यमान हुए । ऐसी हालत में नारी जीवन में भी बदलाव आना स्वाभाविक है । इस युग में स्त्री शिक्षा का प्रचार हुआ । अब नारी घर की चहर दीवार को तोडकर समाज में अपनी भूमिका निभाने लगी ।अत: उन्हें नई समस्याओं से संघर्ष करना पडा ।इस सन्दर्भ में मानवाधिकार पर विचार करना जरूरी है ।

**मूल शब्द:** मानवाधिकार, महिलाओं की दशा, हिन्दी नाटक, नारी लेखन

---

[1]सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, कोच्चिन विज्ञान एवं प्रौद्यिगिकी विश्वविद्यालय, email: aneeshkn1@gmail.com

**प्रस्तावना**

सबसे पहले 1946 में महिलाओं की दशा पर आयोग की स्थापना की गई थी। आयोग ने 7 नवंबर 1967 को महिलाओं के विरूद्ध सभी प्रकार के भेदभाव की समाप्ति पर अंगीकार किया। 1981 एवं 1999 में स्त्री शोषण के खिलाफ सशक्त नियम तैयार हुआ । मानव अधिकारो की रक्षा के लिए एवं संयुक्त राष्ट्र घोषणा पत्र के अनुसार भारत में मानवाधिकार आयोग का गठन किया गया हैं। भारत ने इस समय संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार सम्मेलनों आर्थिक एवं सामाजिक परिषद एवं महासभा के अधिवेशनों में मानवाधिकार मुद्दों पर सक्रिय रूप से भाग लिया हैं। मानव अधिकार संरक्षण अधिनीयम, 1993 की धारा 30 में मानव अधिकारों के उल्लंघन संबंधी शीघ्र कारवाई उपलब्ध कराने के लिए मानव अधिकार न्यायालय अधिसुचित करने की परिकल्पना की गई हैं। देश भर में इस प्रकार के न्यायालय स्थापित भी किए जा चुके हैं। इसके साथ साथ राष्ट्रीय महिला आयोग का गठन हुआ हैं, नारी की स्थिति समाज में और अधिक परिवर्तित होने लगी हैं। आज महिलाएं कर्मक्षेत्र में भी आगे आई हैं। वे विभिन्न सेवाओं में कदम रखने लगी हैं ।

उत्तरआधुनिक साहित्यिक जगत में नारीवाद एक महत्वपूर्ण विचारधारा है । अब तक हाशिएकृत नारी शिक्षा प्राप्त करने से अपने अधिकारों के बारे में सचेत होकर पुरुषसत्तात्मक समाज से लडने को काबिल हुई । पुरुषमेधा समाज अभी तक स्त्री को एक उपभोग वस्तु समझ रहा था । उसे इन्सान माने को तैयार नहीं था । इस तरह की अमानवीयता की प्रतिक्रिया स्वरूप नारी मुक्ति आन्दोलन शुरू हुआ । नारी हक के लिए लडने को तैयार हुई । नारी मुक्ति आन्दोलन के माध्यम से नारी अस्मिता को रूपायित करने की कोशिश साहित्य के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण है । अभी तक साहित्य भी पुरुष वर्चस्ववादी सामाजिकता के अनुकूल था । लेकिन उत्तराधुनिक समाज में स्त्री को साहित्य के केन्द्र में प्रतिष्ठित कर स्त्री-लेखन सशक्त हुआ । भोगे हुए अनुभव को खुद प्रस्तुत करने की ताकत अब तो औरत को प्राप्त है । नई संवेदना के साथ नये युग में नारी लेखन महिलाओं की दशा की विभिन्न विधाओं में शुरू हुआ । नाट्यसाहित्य भी इस परिवर्द्धन से असंपृक्त नहीं । अब तक नाटक को पंचम वेद घोषित कर उसे पुरुष ने अपने अधीन में रखा था । आलोचनात्मक दृष्टि से देखा जाय तो भारतीय नाट्यकला का आरंभ ऋग्वेद, रामायण, महाभारत जैसे महाकाव्यों में व्याप्त संवादों से माना जाता है । इस सन्दर्भ में गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषी नारियों को स्मरण करना अनिवार्य है । ऋग्वेद के संवादात्मक अंशों से नाट्यसाहित्य की उत्पत्ति माना जाय तो उनमें एक है यम- यमी संवाद ।यह नाटक के जन्म की दृष्टि से महत्वपूर्ण है तथा नाट्यसाहित्य में नारी विमर्श का सूचक भी है । यम और यमी भाई –बहन है । लेकिन स्त्री और पुरुष के रूप में दोनों हमारे सामने आते हैं । इसमें यमी खुद यम से शारीरिक संबन्ध को प्रेरणा देती है । यहाँ हमें स्पष्ट होता है कि भारतीय समाज में वैदिक काल से लेकर नारी स्वतंत्र अस्तित्व से संपन्न थी । स्वतंत्रता पूर्व में मुख्यरूप से नारी लेखन के सन्दर्भ में श्रीमती लाली देवी का नाम उल्लेखनीय है । 'गोपीचन्द' नाटक में लीला देवी ने नारी समस्या का चित्रण किया है ।इसमें पति संन्यास ग्रहण करने के कारण पत्नियों के जीवन में आये हुए परिवर्तन मुख्य समस्या है । "इसकी लेखिका तत्कालीन नाट्यपरंपरा से परिचित होते हुए भी उससे हटकर नये प्रयोग की प्रयास करती है । जैसे नाटक में लोकशैली का प्रयोग, गीतों का प्रयोग तथा पौराणिक कथा होते हुए भी स्त्री विमर्श का स्पर्श।"[2] अपनी इच्छाओं को प्रकट करने की ताकत प्रारंभिक समय में स्त्री के पास उपलब्ध थी।

हिन्दी नाटकों में स्त्री लेखन आज़ादोत्तर वातावरण की उपज है ।आधुनिक शिक्षित नारी ने मानवाधिकारों के प्रति जागरूक होने की वजह से प्रचलित मान्यताओं को अस्वीकार किया । वह प्राचीन रूढियों से मुक्त होने लगी । अत: नारी संबन्धी सभी विषयों को लेकर समाधान खोजने का प्रयास किया गया है । इस सन्दर्भ में मन्नूभण्डारी, मृदुला गर्ग,मीराकान्त जैसे महिला नाटककारों का योगदान उल्लेखनीय है ।इन महिला नाटककारों ने रंगमंच को महिलाओं के अधिकार, मानावाधिकार प्राप्त करने केलिए एक सशत्र हथियार के रूप में इस्तेमाल किया ।

नारी लेखन के क्षेत्र में मन्नूभण्डारी सक्रिय व्यक्तित्व है । उन्होंने अपनी रचनाओं में नारी के स्वतंत्र और मौलिक व्यक्तित्व की खोज की है । सामाजिक रूप से नारी के बन्धनों के खिलाफ सशक्त विद्रोह आपकी खासियत है । इस दृष्टि से देखा जाय तो 'बिना दीवारों के घर' सक्षम है । समझौता करने केलिए आज नारी तैयार नहीं है । अपने अस्तित्व के लिए, स्वतंत्र व्यक्तित्व के लिए घर छोडने में आधुनिक नारी हिचकती नहीं । शिक्षा से आत्मनिर्भर नारी पुरुष के साथ कंधे मिलाने को तैयार है । लेकिन इससे पारिवारिक जीवन में दरारें पडना स्वाभाविक है । पुरुषवर्चस्ववादी सामाजिक मानसिकता ने स्त्री के अलग अस्तित्व को स्वीकार करने को कदापी तैयार नहीं है । इसमें नाटककार ने पुरुष के अहंग्रस्त मानसिकता का चित्रण करते हुए टूटते हुए पारिवारिक संबन्धों का चित्रण किया है । नायक अजित हमेशा पत्नी के बारे में कहता है –" अरे वह है अजित मेड"। शोभा अपनी योग्यता से अध्यापिका बनी, फिर प्रिंसिपल बनने का प्रस्ताव आया । प्रिंसिपल के पद स्वीकार करने से उन दोंनों के बीच संघर्ष पैदा होता है । यहाँ हम देख सकते हैं कि अजित शोभा को मात्र एक नौकरानी मानता था । अलग अस्तित्ववाली नारी समझने को तैयार नहीं है । शोभा पतिको समझाने की कोशिश करती है-" आप को घर का इतना ख्याल है पर अपनी और अप्पी का ख्याल है पर कभी मेरा भी ख्याल किया है आपने ? कभी मेरी भावनाओं को समझने की कोशिश की है ? मेरी अपनी कुछ आकाँक्षाएँ हैं, अपने जीवन के स्वप्न हैं । इस घर की चार दिवारी के परे भी मेरा अपना कोई अस्तित्व है, व्यक्तित्व है"।[3]

माँ होना नारी विकास में सबसे बडी बाधा है । माँ होने से स्त्री मुक्ति संभव नहीं है क्योंकि बच्चे को छोडकर जाने केलिए नारी कभी भी तैयार नहीं है । लेकिन बच्चे को भी छोडने केलिए , अपने अन्दर जो माँ का रूप है उसे सदा के लिए मारने को भी शोभा उद्यत है । शोभा कहती है कि " मैं अकेली ही चली जाऊँगी। जहाँ मैंने अपने भीतर की पत्नी को मारा है, वहीं अपने भीतर की माँ को भी मार दूँगी । बच्ची की कुर्बानी से यदि तुम्हारा अहं संतुष्ट होता है तो उस मासूम बच्ची की भी कुर्बानी करूँगी"।[4] इसप्रकार अजित के अहं और शोभा के आत्मसम्मान ने एक घर को बिना दीवारों का घर बना दिया । मन्नू भण्डारी का दूसरा नाटक है 'महाभोज' । इसमें राजनीति के क्षेत्र में व्याप्त भृष्टाचार का चित्रण मन्नू जी ने प्रस्तुत किया है ।

'एक ओर अजनबी'में मृदुला गर्ग ने शिक्षित नारी की उच्छ्रृखलता का चित्रण किया है । आज नारी स्वेच्छा से संबन्ध स्थापित करना चाहती है । इसलिए विवाह की त्रासदी, विवाहेतर संबन्धों की बहुलता आदि इसका परिणाम है । नारी होने के नाते मृदुला गर्ग ने नारी मानसिकता का चित्रण बहुत ही संजीदगी से किया है । शिक्षित आधुनिक नारी सबकुछ बिकाऊ बना देने में हिचकती नहीं । इसका प्रमाण है 'शानी'। वह महत्वाकांक्षा की लालच में उपभोक्तावादी समाज में अपने आपको एक सामग्री मानती है । नये युग में प्रेम का अर्थ समाप्त हो गया है । आज प्रेम वासना में बदल हो चुका है । शानी विवाहित होकर भी पूर्व प्रेमी के सामने आत्मसमर्पण करती है । मृदुला गर्ग अपने पात्रों को परंपरा के

लीक से लेकर चलाने को तैयार नहीं है । पति जगमोहन को पदोन्नति प्राप्त होने के लिए शानी इन्दर से संबन्ध स्थापित करती है । इस सन्दर्भ में जगमोहन कहता है कि " उसके लिए प्रेम एक हवस है जो क्षण भर में शांत हो जाता है" ।[5] आजके युग में बीवी की बूते के द्वारा ऊपर उठने को पति तैयार है ।मृदुला गर्ग ने इस तरह बदलते सामाजिक यथार्थ को रेखांकित करने में सफलता प्राप्त की ।जीवन भर एक पुरुष के साथ जीने को आज नारी तैयार नहीं है जिस प्रकार 'देवयानी' कह रही है –" One apple is not enough for whole the life ."[6] उसप्रकार शानी भी कह रही है कि " मुझे ऐसी ज़िन्दगी से नफरत है जो गरम साँसों से भरे कमरे में बंद हो – मैं खुली हवा में जीना चाहती हूँ और तुम भी खुली हवा में जीओ"।[7]

महिला लेखन सामाजिक समस्याओं को भी रेखांकित करने में सफल है । मृदुला गर्ग ने 'जादू का कालीन' शीर्षक नाटक में कालीन उद्योग में कार्यरत बाल श्रमिकों की समस्याओं का चित्रण किया है । आर्थिक अभाव से तडपनेवाले बालमजदूरों की समस्या, बच्चों को बिकाऊ माल के रूप में बिकनेवाले माँ-बाप, विकास के नाम पर होनेवाले विस्थापन, स्वयं सेवी संगठनों से जुडे हुए लोगों का पाखण्ड आदि इसका मुख्य विषय है । अभावग्रस्त मानव जीवन का दस्तावेज है यह नाटक । स्वातंत्र्योत्तर भारत में वन के करीब रहनेवाले वनवासीलोगों को जंगल में जाना कानूनी अपराध है । इससे इन लोगों को जीने के लिए कोई चारा नहीं है । मृदुला गर्ग ने ऐसे खोखलापन को प्रस्तुत किया है । उपभोक्तावादी समाज में सब कुछ बिकाऊ माल है । नाटक में रमई अपनी लडकी को इसप्रकार बेच रही है –" मेरी लडकी को लेके जाओ, बाबू सौ नहीं तो नब्बे दे देना । ले जाओ बाबू । नब्बे नहीं तो अस्सी दे देना" ।[8] इस नाटक में कालीन उद्योग के क्षेत्र में व्याप्त शोषण, बच्चों का शोषण एवं आर्थिक विपन्नता मुख्य विषय है ।

आज घर में भी स्त्री सुरक्षित नहीं है । आधुनिक समाज में पारिवारिक रिश्ते पवित्र नहीं हैं, यौन शोषण के लिए एक मुखौटा मात्र है । समसामयिक पारिवारिक जीवन में व्याप्त यौन शोषण का चित्रण मीराकांत ने अपने नाटक 'अंत हाजिर हो' में किया है । पारिवरिक स्तर पर व्याप्त बलात्कार या यौन उत्पीडन आज का सामाजिक यथार्थ है । आज तक पिता और पुत्री के बीच का संबन्ध पुनीत था लेकिन आज पिता सोच रहा है कि " क्या ज़िन्दगी है हमारा भी यार ... बीज बोओ। उसे सींचते रहो सालों ... पालो-पोसो ...जब तक लह लहाने लगे तो किसी और की नज़र करदो । तुम भी तो भुगत रहे हो । तुम्हारी ऐसी खूबसूरत जवान बेटी को लेजाने को वो साला तुम्हारा प्रोसपेक्टिव दामाद कीमत चहता है । कम न ज्यादा दस लाख । साला ...पालें हम खायें दूसरे" ।[9] स्त्री पक्ष में खडे होकर पारिवारिक जीवन में आये हुए बदलाव को सूचित करने में प्रस्तुत नाटक कामियाब है । अब तक ऐसी घटनाओं से हम अनभिज्ञ थे । लेकिन आज नारी लेखन के मुताबिक यथार्थ को व्यक्त करने में वे सफल हैं । अपसंकृति

ग्रस्त पारिवारिक जीवन में लडकियों की त्रासदी रेखांकित करने में मीरा कांत सफल सिद्ध हुईहै ।घर तो आश्रय था, लेकिन आज वासनाग्रस्त, कामातुर पिता अपनी ही बेटियों से बलात्कार करने में हिचकता नहीं । नाटक में शिल्पा कह रही है – "सुना था लतायें पेड से आश्रय पाती है । पेड अपना स्वत्व देकर उसका सहारा बनता है । पर ऐसी अभागी लतायें भी होती है जिन्हें आश्रय के नाम पर पेड निगल जाते हैं " ।[10]

बलात्कार का शिकार होने से बच्चों की मानसिकता बदल जाती है ।इसमें 13-14 साल की छोटी लडकी अब एब्सेड बन गयी । पढाई में भी रुची नहीं है । छोटी ने खुद देखा और भोगा है इससे वह हमेशा कह रही है कि " जी चाहता है कि किसी से न मिलूँ। किसी से भी नहीं । शरीर को कहीं रख दूँ । सबकी नज़रों से बचाकर अलमारी में बन्द कर दूँ या फ्रिज में या फिर ...या फिर सीढियों के नीचे के सुनसान अंधेरे में ...जहाँ कोई नहीं झाँकता .. अंधेरा... बसे अंधेरा.... अंधेरे से बातें करूँ .. अंधेरे में नहाऊँ ... अंधेरे में कपडे बदलूँ ...और वहीं कहीं अंधेरे में ओढ कर सो जाऊँ .."।[11] इसतरह वह पिता से बच पाने की कोशिश करती है । अंत में छोटी लडकी ने इस संघर्ष से बचने केलिए आत्महत्या की । सदियों से पुरुष स्त्री को  दमित वासना के हेतु मानते थे ।आज उसे बेटी या पत्नी में कोई भिन्नता नहीं है । ऐसी सामाजिक अपसंस्कृति को चित्रित करने में मीरा कांत सफल है ।

मीरा कांत ने 'हुमा को उड जाने दो' शीर्षक नाटक में हुमायूँ के जीवन को प्रस्तुत करने की कोशिश की है । हुमायूँ एक मुगल बादशाह होने से भी जितना संघर्ष भोगा है, उस का चित्रण इसका विषय है । नाम के अनुसार तो वे एक भाग्यवान बादशाह है। लेकिन वास्तव में एक बदकिस्मत शासक है हुमायूँ । इसमें इतिहास तो प्रेरणा मात्र है ।शासक के मन, संघर्ष और अंतर्विरोधों को रेखांकित करने में नाटककार सक्षम है । शासक होने पर भी उसका मन किसप्रकार है , खुद हुमायूँ कहता है कि " बचपन का वाक़या है... रहे होंगे हम 11-12 बरस के ... अब्बा हुज़ूर के साथ दमन की सैर कर रहे थे । अचानक कुछ दूर के तालाब में कुछ्र बतखें दिखाई दीं । हम उनका खेल देखने को ज़रा- सा ठिठरके तो अब्बा हुज़ूर ने देखलिया । फ़ौरन हाथ में तीर कमान देकर कहा कि बाईं तरफ की सफेद बतख पर निशाना साधो ।उनके लिए यह हमारी तीर अंदाज़ी की मश्क थी । हमने निशाना साधा और तीर लगते ही दर्दनाक चीख के साथ वह बतख लहरों पर छटपटाने लगी" [12]। इस तरह के संघर्ष को प्रस्तुत कर के मीरा कांत ने आधुनिक मुनुष्य के संघर्षों से जोडने का प्रायास किया ।

प्रारंभिक दौर में नारी लेखन का उद्धेश्य समाज में बराबरी का हक पाना है । रचनाओं के ज़रिए समयानुसार नारी समाज में समता प्राप्त कर रही है । पुरुषवर्चस्ववादी ताकतों से लडकर नारी ने समाज में अलग अस्तित्व प्राप्त किया है । अब नारीलेखन स्त्री समस्याओं तक सीमित न रह कर सामाजिक समस्याओं को भी समेटने में सफल है । बदलते हुए सामाजिक मूल्य को स्थापित करना तथा

भूमण्डलीकरण के प्रतिरोध करने में नारी लेखन सक्षम है ।इस दृष्टि से देखा जाय तो हिन्दी नाटक भी संपन्न है ।

**निष्कर्ष**

नाटक जनसाधरण का मध्यम है । रंगमंचीयता के कारण नाटक सीधे लोगों को प्रभावित करता है ।अतः नाटक संबन्धी चर्चाओं में रंगमंच को भी देखना अनिवार्य है ।आधुनिक हिन्दी रंगमंच में महिला निर्देशकों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं । नारी नाट्य से लेकर नाटक प्रस्तुति तक सभी क्रियाकलापों में अपनी भागीदारी देने को तैयार है। रंगमंच से संबन्ध जोडनेवाली महिलाओं में अनुराधा कपूर, त्रिपुरारी शर्मा, कीर्ति जैन, उषा गांगुली आदि ने उल्लेखनीय काम किया है। इन महिला निर्देशकों ने जेंडर समस्याओं को मंच में प्रस्तुत किया । इन्होंने जो समस्याओं को मंच में प्रस्तुत किया, आधुनिक समाज अब तक उस सन्दर्भ में खामोश था । इस प्रकार देखा जाय महिलओं के लिए महिलाओं के द्वारा लिखा गया सहित्य इसके अंतर्गत हैं । इसमें समाज में स्त्री की दशा और उसकी त्रासद स्थितियों को दर्शाया गया ।महिला मानवाधिकार से संबन्धित समस्याओं के समेटने में स्त्री लेखन सक्षम है । इसमें नारी जीवन से संबन्धित बहुआयामी समस्याओं का बयान है जो नारी जारण की दृष्टि से अनुपम है। शोषण को अवगत कराना, उसके खिलाफ जंग बोलना अपने आप महत्वपूर्ण है ।संक्षेप में काह जाय तो इन नाटकों में मानवाधिकार एवं उसकी समस्यायें सशक्त रूप से अंकित हैं ।

**संदर्भ ग्रंथ**

1.सुमन राजे , हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास , पृ-294

2. मन्नू भण्डारी,बिना दीवारों के घर, पृ-34

3. मन्नू भण्डारी,बिना दीवारों के घर, पृ-47
4. मन्नू भण्डारी,बिना दीवारों क घर, पृ-99

5. मृदुला गर्ग, एक ओर अजनबी,पृ- 24
6. रमेश बक्षी,देवयानी का कहना है, पृ-39
7. मृदुला गर्ग, एक ओर अजनबी,पृ- 60
8. मृदुला गर्ग,जादू का कालीन,पृ-43

9. मीरा कांत,अंत हाजिर हो,पृ-65
10. मीरा कांत,अंत हाजिर हो,पृ-42

11. मीरा कांत,अंत हाजिर हो,पृ- 64
12. मीरा कांत,हुमा को उड जाने दो,पृ-34